मासिक पत्रिका जून 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल प्रधान | विजय भाटिया मंत्री | अमर सिंह पहल कोषाध्यक्ष

विभिन्न विषयों पर आर्य समाज का दृष्टिकोण

-प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार

साभार: वैदिक सार्वदेशिक- अप्रैल 2019

कोई भी तर्कहीन परम्परा समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है। सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए यह आर्य समाज का मूल मंत्र है। विभिन्न विषयों पर आर्य समाज का दृष्टिकोण निम्नवत है।

ईश्वर- ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त निर्विकार, सर्वव्यापक, अनुपम, सर्वाधार और सृष्टिकर्ता आदि गुणों से युक्त है। एक मात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

वेद- वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद की समस्त शिक्षाएं व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं सृष्टि नियमों में साम्य रखती है। अत: वेद स्वत: प्रमाण हैं। संसार के सभी स्त्री पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार है। मध्यकालीन ग्रन्थों एवं परम्परा में स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन से वंचित करना हमारे इतिहास का कलंकित अध्याय है।

मध्यकालीन वेद भाष्यकारों उव्वट, महीधर और सायण आदि विद्वानों द्वारा वेद मन्त्रों का पशुहिंसा, श्राद्ध, अश्लीलता परक व्याख्यान तथा पाश्चात्य भाष्यकारों द्वारा वेद को गडरियों के गीत बताना एवं उनमें लौकिक इतिहास सिद्ध करना दुराग्रह मात्र है, यथार्थ नहीं।

प्रामाणिक साहित्य- वेद के उपदेशों से साम्य रखने वाले उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, स्मृतिग्रन्थ एवं सूत्र साहित्य आर्ष ग्रन्थ हैं।

पंच महायज्ञ- प्रत्येक ग्रहस्थ को यथासम्भव प्रतिदिन निम्न पाँच यज्ञ करने चाहिए। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् निराकार ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए आत्मालोचन।

देवयज्ञ अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण एवं दान (हवन)।

पितृयज्ञ अर्थात् माता, पिता, आचार्यों के ऋण से उऋण होना।

अतिथि यज्ञ अर्थात् सदाचारी व परोपकारी जनों का सम्मान व सहयोग करना।

बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् पशु पक्षियों का पालन पोषण।

गुरु- जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अत: गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है।

धर्म- धर्म वृत्तिमूलक आचरण परक है। दस वृत्तियों धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच (स्वच्छता), इन्द्रियनिग्रह, धी (विवेक युक्त बुद्धि), विद्या, सत्य एवं अक्रोध से युक्त जीवन ही धार्मिक जीवन है।

कर्मफल- किसी भी शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। किसी भी प्रकार का कर्मकाण्ड पापकर्मों के फल को परिवर्तित नहीं कर सकता।

श्राद्ध- ईश्वरोपासना, स्वाध्याय एवं सदाचरण करते हुए जीवित माता-पिता, गुरुजनों एवं वृद्धजनों की सेवा करना ही श्राद्ध है।

स्वर्ग-नरक- स्वर्ग नरक कोई विशेष स्थान नहीं है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दु:ख विशेष का नाम नरक है और वे भी इसी संसार में शरीर के साथ ही भोगे जाते हैं।

मृतक कर्म- मनुष्य की मौत के बाद उसके मृत शरीर का दाहकर्म करने के पश्चात् अन्य कोई करणीय कार्य नहीं रह जाता।

पूजा का अर्थ- जड़ पदार्थों का उचित रख-रखाव व सदुपयोग ही उनकी पूजा है तुलसी और पीपल आदि के वृक्ष ज्वर आदि रोगों में लाभदायक हैं अत: इनकी रक्षा होनी चाहिए।

मुहूर्त- जिस समय चित्त प्रसन्न हो तथा परिवार में सुख शांति हो वही शुभ मुहूर्त है। ग्रह नक्षत्रों की दशा देखकर पण्डितों से शादी ब्याह, कारोबार आदि के मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है। दिनों का नामकरण हमारा किया हुआ है भगवान का नहीं।

राशिफल एवं फलित ज्योतिष- ग्रह नक्षत्र जड़ हैं और जड़ वस्तु का प्रभाव सभी पर एक सा पड़ता है अलग-अलग नहीं। अतः ग्रह नक्षत्र देखकर राशि निर्धारित करना एवं उन राशियों के आधार पर मनुष्य के विषय में भांति-भांति की भविष्यवाणियाँ करना नितान्त अवैज्ञानिक है।

जाति बनाम वर्ण व्यवस्था- आर्य समाज वर्ण व्यवस्था का समर्थक है। वर्ण व्यवस्था का आधार गुण, कर्म है। जबकि व्यवस्था जन्मगत है। वर्ण व्यवस्था में नीच कर्म करने वाला शूद्र और श्रेष्ठ कर्म करने वाला ब्राह्मण कहलाता है। कर्म ही व्यक्ति को श्रेष्ठ और पतित बनाते हैं। मनु महाराज के अनुसार जन्म से सभी शूद्र होते हैं। ■■

मृत्युंजय महामंत्र (The mantra of victory over death)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भावार्थ-हम त्र्यम्बक की पूजा करते हैं। अय् धातु मात्र्यर्थक है-अर्थात्, हम वेद-वाणी रूपी उस माँ की पूजा करते हैं जो त्रिविध रूप से हमें पुष्टि देती है। हमें भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट करती है। हम जीवन में मृत्यु के बन्धन से बंधे हुए हैं। जो पैदा होता है उसका मरना निश्चित है, परन्तु वेद-माता हमें मृत्यु के बंधन से इस प्रकार मुक्त कराये जेसे मीठा फल (खरबूजा) पक जाने पर स्वयं गिर पड़ता है। उसका वृक्ष से अलग होना अलग न होने के समान होता है, उसे वृक्ष से पृथक् होने में कोई खींचातानी, किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। हम भी उस फल की तरह संपूर्ण जीवन में मिठास भरा हुआ जीवन-यापन करें और पके फल की तरह जीवन से मुक्त हो जायें। इस प्रकार हम मृत्यु के बन्धन से मुक्त हों जायेंगे, परन्तु परम पिता भगवान् से हमारा संबंध बना रहेगा, हम मर कर भी अमर रहेंगे। इस मंत्र का प्राणायाम के साथ जप किया जाता है, इसीलिये हम मंत्र को मृत्युञ्जय महामंत्र कहते हैं।

मृत्युंजय महामंत्र का जाप प्राणायाम के साथ किया जाता है। प्राणायाम के तीन भाग हैं पूरक, कुंभक तथा रेचक। प्राणायाम करते हुए पहले शुद्ध वायु में बैठ कर फेंफड़ों से सारी वायु को जोर से बाहर निकाला जाता है। यह 'रेचक' है। जब भीतर की वायु जहाँ तक निकल सकती है निकल जाय, तब शुद्ध वायु को भीतर खींचा जाता है। जितनी देर भीतर आसानी से रख सकें रखा जाता है। भीतर खींचने को 'पूरक' तथा अन्दर रोकने को कुम्भक कहते हैं। कुम्भक की अवस्था में भीतर की वायु जिसमें कार्बन डायोक्साइड थी और जिसमें कुम्भक के कारण बाहर की शुद्ध वायु भीतर आ गई-इन दोनों का आदान-प्रदान होता है जिसे 'औस्मोटिक प्रोसेस' कहते हैं जो कुम्भक की स्थिति में होती है। इस स्थिति में कार्बन डायोक्साइड बाहर जाती है और वायु की जीवन-प्रद आक्सीजन भीतर आती है। इसके बाद प्राणायाम की तीसरी प्रक्रिया शुरू होती है जिसमें कार्बन डायोक्साइड का बाहर फेंक दिया जाता है। इसे 'रेचक' कहते हैं। इस प्रकार 'रेचक' दो बार किया जाता है-प्रारंभ में और अन्त में। प्राणायाम की इन प्रक्रियाओं में महामृत्युञ्जय मंत्र का जाप किया जाता है। यह मंत्र ऋग्वेद ७.५९.१२ में भी पाया जाता है।

While performing *Pranayam* we recite the above Mantra during the three stages of *Pranayam* - *Purak, Kumbhak* and *Rechak*. *Purak* means inhaling of fresh air; *Kumbhak* means retention of fresh air; *Rechak* means exhalation of the polluted air. In *Pranayam* first we forcibly empty the lungs. After they are emptied, we inhale fresh air which is laden with oxygen. This process of inhalation is called *Purak.* After lungs are filled with fresh air, the second process is retention of fresh air which is called *Kumbhak.* During this second stage osmotic process takes place. Thus, carbon dioxide of the body and oxygen of the fresh air interchange, that is, oxygen is taken in and carbon dioxide is given out during this process. This is the second process. Then, there is the third process when the carbon dioxide is forcibly given out. This process is called *Rechak.* During all this process one goes on reciting mentally the *Mrityunjay Maha-Mantra.* It is a psychological process which is going on with auto-suggestions. In this, one is saying to one-self that he should be like a ripened fruit which automatically drops off from the tree. One suggests to oneself that his death, which is a certain phenomenon, should not be a misery to him and to his family-death which is not a death, but an IMMORTALITY. One prays to the Lord entreating Him as MOTHER, who looks after him physically, mentally and spiritually-in all the three phases of his being and nourishes him like a cow does to her young one. ■■

जून 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
02	डॉ. जयेन्द्र (9899349304)	ईश्वर दर्शन कैसे हो?
09	श्री सतीश सत्यम (9811164828)	सुमधुर भजन
16	डॉ. अजीत कुमार (8882056852)	मनुस्मृति पर चिंतन
23	आचार्य राजू वैज्ञानिक (7011475777)	
30	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	संसार में दु:ख क्यों है?

मई मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
डॉ. चन्द्रप्रभा भसीन	1,00,000/-	श्री सुनील बिसला	2,700/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
M/s एल.ई. ट्रवल वर्ल्ड प्रा.लि.	20,000/-	श्री रमन मेहता	2,000/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
		श्रीमती सुधा गर्ग	1,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री प्रेम कृष्ण बहल	5,100/-	श्री सुनील अबरोल	1,100/-	श्री के.कौल एवं परिवार	700/-
M/s एम.आर. एसोसिएट्स	3,100/-	श्रीमती सत्या ढींगरा	1,000/-	श्री नरेन्द्र वाधवा	500/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) ₹ 25,00,000/- ❖ श्रीमती सतीश सहाय ₹ 5,000/-

अल्ट्रा साउण्ड मशीन के लिए दान राशि:—

❖ लाला दीवान चन्द ट्रस्ट, 2 जैन मन्दिर रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली ₹ 7,50,000/-

दही सेवन की विधि

सामान्यतया आयुर्वेदानुसार रात्रि में दही नहीं खाना चाहिए। दही का सेवन करते समय इसमें घी, शहद, चीनी, मूंग की दाल या आँवला चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, हिंग्वाष्टक चूर्ण आदि में से कुछ न कुछ अवश्य मिला लेना चाहिए। अर्थात् इन पदार्थों के बिना दही का सेवन नहीं करना चाहिए। दही को आग या धूप आदि से गर्म करके नहीं खाना चाहिए। कफ-पित्तकारक होने से ग्रीष्म, वसन्त और शरद् ऋतुओं में दही का सेवन निषिद्ध किया है। वर्षा, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं में दही का सेवन उचित माना गया है। दही में पानी डालकर लस्सी बनाई जा सकती है इसमें उचित मात्रा में लवण या शहद आदि मिलाकर तथा कढ़ी व रायता आदि के रूप में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। **साभार:** आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य - आचार्य बालकृष्ण

मन्त्रों के प्रारम्भ में 'ओ३म्' का उच्चारण क्यों करते हैं-

-डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री

ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनन्त है। अत: इनके नाम भी अनन्त हैं। किन्तु सभी ग्रन्थों में ईश्वर को ओ३म् नाम से ही स्मरण किया गया है।

'ओ३म्' में तीन अक्षर हैं-अ, उ, म्, जब हम 'अ' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ खुल जाते हैं। इस प्रकार हम ईश्वर के उस स्वरूप को याद करते हैं, जिससे सृष्टि बनती है। यह सूचक है, सृष्टि उत्पत्ति का।

जब हम 'उ' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ गोलाकार रूप धारण कर लेते हैं, जैसे मानो ईश्वर ने अपने गर्भ में इस सम्पूर्ण चर-अचर जगत् को अपने गोलाई में धारण किया हो।

और जब हम 'म्' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ पुन: बन्द हो जाते हैं। हम याद करते हैं ईश्वर के उस प्रचण्ड स्वरूप को जोकि इस सम्पूर्ण सृष्टि को मानो बन्द कर देते हैं। इस प्रकार ये तीनों ही अक्षर उस भगवान् के उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय के सूचक हैं।

अकार से ब्रह्म का, उकार से जीव का और मकार से प्रकृति का ग्रहण होता है। परमात्मा स्वतन्त्र है। जीव भी कर्म करने में स्वतन्त्र है। परन्तु प्रकृति जड़ होने के कारण चेतन ईश्वर और जीव के बिना कुछ नहीं कर सकती, इसलिए मकार स्वर वर्ण के बिना उच्चरित होता है तो प्रकृति भी मानो इन दोनों के बिना कुछ कार्य नहीं कर सकती। साभार: अग्निहोत्र

विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर

आर्य समाज और अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के संयुक्त तत्वधान में पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर 13 मई 2019 से 24 मई 2019 तक आयोजित किया गया। शिविर में 5 वर्ष से लेकर 11 वर्ष आयु के लगभग 130 बच्चों ने भाग लिया। प्रतिदिन कक्षाएँ प्रात: 8:00 बजे से 11:00 बजे तक लगती थी। शिविर में योग, हास्ययोग, ध्यान, संगीत, नृत्य, आर्ट्स और क्राफ्ट, ड्राईंग और पेंटिंग, कहानी सुनाना, गेम्स आदि की कक्षाएँ हुई। शिविर में कक्षाएँ कुमारी कंचन, सन्ध्या अरोड़ा, सविता शर्मा, नीना गोयल, मीनाक्षी नन्दा, वीना कश्यप, अमला ठकराल, तरंग कंडपाल, कर्नल गोपाल वर्मा, आकांक्षा कपूर, रोशनी, अमीता और अमृत पॉल आर्य शिशु शाला की मुख्य अध्यापिका तथा सभी अध्यापिकों ने ली। उपरोक्त सभी को साधुवाद और धन्यवाद। शिविर का समापन सत्र बहुत सादगी और उल्लास से मनाया गया। बच्चों ने इस प्रकार के शिविर को बहुत पसन्द किया। इस सफल कार्यक्रम का संयोजन श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा तथा सह-संयोजक श्रीमती अर्चना वीर की देखरेख में हुआ।

श्रीमती अकांक्षा कपूर बच्चों को कहानी सुनाते हुए।

योगाभ्यास कराते हुए।

शिविर में बच्चे देशभक्ति गाने पर नाचते हुए।

कु. कंचन आर्य मेडिटेशन कराते हुए।

अध्यापिका बच्चों को आर्ट सिखाते हुए।

श्री बिरेन्द्र प्रसाद (न्यूरोथैरेपिस्ट) बच्चों को पुरस्कार देते हुए।

ओ३म्

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

B-31/C , कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

फोन : 29240762, 46678389 • ईमेल : samajarya@yahoo.in

वेबसाइट : www.aryasamajgk1.org

के तत्वाधान में

विश्व पर्यावरण दिवस

के अवसर पर निम्न पार्कों में

दिनांक : 1, 4, 5, 6, 7 एवं 8 जून, 2019

को यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है :-

दिनांक	स्थान	समय	धर्माचार्य	संयोजक
1/6/19 (शनिवार)	'S' ब्लॉक पार्क, शिव मन्दिर ग्रेटर कैलाश-1	प्रात: 7:15 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	श्री राजीव चौधरी
4/6/19 (मंगलवार)	'R' ब्लॉक पार्क (बंगाल स्वीट्स के नजदीक), ग्रेटर कैलाश-1	प्रात: 7:00 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	श्री विजय भाटिया
5/6/19 (बुधवार)	'E' ब्लॉक पार्क, ग्रेटर कैलाश-1	प्रात: 7:15 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	श्री विजय भाटिया
6/6/19 (बृहस्पतिवार)	'N' ब्लॉक पार्क, ग्रेटर कैलाश-1	प्रात: 7:15 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	श्री पुनीत गर्ग
7/6/19 (शुक्रवार)	'B' ब्लॉक पार्क (नजदीक आंध्रा बैंक) ग्रेटर कैलाश-1	प्रात: 7:00 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	कर्नल गोपाल वर्मा
8/6/19 (शनिवार)	सैन्ट्रल पार्क, ग्रेटर कैलाश इन्कलेव-1	प्रात: 7:15 से 8:00	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी	श्रीमती उषा मरवाह

आप इस कार्यक्रम में सपरिवार व इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। आप अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाऐं। आपकी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ेगी और हमारे उत्साह को बल मिलेगा।

कार्यक्रम के पश्चात् प्रसाद वितरण की व्यवस्था रहेगी।

निवेदक

प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अमर सिंह पहल
मो. 9899868573	मो. 9810045198	मो. 9899242377

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक उत्थान एवं आनन्द का अत्यन्त कल्याणकारी आयोजन

मानव मात्र के सर्वविध कल्याण के लिए आर्यसमाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 में शनिवार 1 जून 2019 से 'वेदान्त दर्शन' तथा 'छान्दोग्य उपनिषद्' की सरस और सरल कक्षाएँ आयोजित हो रही हैं

सम्मान्य बन्धु,

जीवन के आन्तरिक आनन्द की प्राप्ति तथा अध्यात्मशास्त्रों के तात्त्विक ज्ञान को समझने के लिये आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 में 'वेदान्त दर्शन' तथा 'छान्दोग्य उपनिषद्' की कक्षाओं में आपका स्वागत है।

वैदिक साहित्य में 'वेदांत दर्शन' का स्थान सर्वोपरि है। इसे ऋषियों ने 'मुक्तिशास्त्र' भी कहा है। वेदों के अंत, यानी, सारतम सिद्धांतों के प्रतिपादक होने के कारण यह 'वेदांत शास्त्र' कहलाता है। महर्षि वेदव्यास ने इसे संपादित कर इसका नाम 'ब्रह्मसूत्र' रखा है। महर्षि दयानंद ने भी सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में 10 उपनिषदों के साथ इसका अध्ययन करने के लिए मानवमात्र को प्रेरित किया है। अत: प्रत्येक साधक को अपने जीवन काल में इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

पूर्ण मनोयोग के साथ इसके अध्ययन से निम्नलिखित लाभ होंगे :

1) भौतिक विज्ञान और अध्यात्म विज्ञान में एक रूपता दिखाई पड़ेगी।

2) मनुष्य का दिव्य चारित्रिक निर्माण होगा, कभी भी जीवन में चारित्रिक अध:पतन नहीं होगा।

3) पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म और कर्तव्यबोध के प्रति उत्तम समझ उत्पन्न होगी।

4) जीवन में आत्मबल, उत्साह, सुख, शांति, मानसिक एकाग्रता आदि दिव्यगुणों की प्राप्ति होगी।

5) तनाव, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि से मुक्ति मिलेगी।

6) पुरुषार्थ करते रहने की रुचि और प्रारब्ध वश मिलने वाले फलों में सर्वदा संतोष प्राप्त होगा आदि।

इन कक्षाओं में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों और दर्शनों के विषयों पर विचार विमर्श के लिए सभी आयु और सभी वर्ग के (विशेषत: युवाओं को केन्द्र में रखकर) व्यक्तियों का स्वागत है।

इन कक्षाओं में जिन प्रतिभागियों की उपस्थिति कम से कम 75% रहेगी उन्हें वेद–संस्थान की तरफ़ से प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया जाएगा।

व्याख्याता	:	डॉ. देवकृष्ण दाश (उपनिदेशक, वेद–संस्थान, नई दिल्ली)
तिथि	:	प्रत्येक मास के प्रथम शनिवार : वेदान्त दर्शन की कक्षाएं (प्रायोगिक)
	:	प्रत्येक मास के चतुर्थ शनिवार : छान्दोग्य उपनिषद् की कक्षाएं (सैद्धान्तिक)
समय	:	सायं 5:00 से 7:15 बजे तक (मध्य में 15 मिनट का अल्पाहार)
स्थान	:	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–1; कक्ष : यज्ञशाला / लाइब्रेरी

कृपया अपना नाम पंजीकरण कराने के लिए श्री राजीव चौधरी (9810014097) या श्री अजय कुमार (011–46678389)/श्री सुरेन्द्र प्रताप (9953782813) से संपर्क करें।

प्रधान	मंत्री	आर्यसमाज महिला सत्संग
विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अमृत पॉल (प्रधाना) रेणू चौधरी (मंत्राणी)

वेद प्रचार समिति

ARYASAMAJ KAILASH–GREATER KAILASH-1 (Regd.) Regn. No. 3594/1968
New Delhi-110048 • Ph.: 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web. www.aryasamajgk1.org
AN ISO 9001:2015 Certified Institution